International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
www.multieducationjournal.com
Volume 1; Issue 4; June 2016; Page No. 22-29

बाथौ धर्म में 'खेराई उत्सव' बोड़ो जनजातियों का धार्मिक एवं आध्यात्मिक विश्वासः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (असम प्रांत के विशेष सन्दर्भ में)

जयन्त कुमार बोरो
अस्सिटेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कोकराझार गवर्मेन्ट कॉलेज, कोकराझार, असम

सारांश
धर्म और दर्शन सभी मानव जातियों की अपनी एक खास तरह की होती है। जातियों के विकास में सभ्यताए संस्कृति और परम्परा के निर्वाह की आवश्यकता होती है। वर्तमान काल में बोड़ो समाज अपने प्राचीन धर्म, दर्शन और परम्परा को मानते हुये अपने संस्कृति को जीवित किये रखा है। बाथौ बोड़ो समाज का प्रधान देवता एवं धर्म है। बाथौ धर्म के अन्तर्गत कई प्रकार के उत्सवों का आयोजन किया जाता है। जिसमें से एक खेराई उत्सव है। खेराई उत्सव हो या अन्य उत्सव वे सारे कृषि से ही सम्बन्धित होते है। खेराई उत्सव बोड़ो ध्रर्म के अन्तर्गत मनाया जाने वाला एक विस्तृत एवं खर्चीला पूजा विधान है। खेराई उत्सव में नर्तकी, ओझा या पुरोहित, वाद्य यन्त्र, औजार आदि काफी चीजों की आवश्यकता होती है। उत्सव के आयोजन के दौरान उक्त सभी वस्तुयें अपनी भूमिका का निर्धारित करता है। खेराई एक बलि विधान से सम्बन्धित उत्सव है इसमें कई सारे जीव-जन्तुओं की देवताओं को प्रसन्न करने के फलस्वरुप उनकी बलि दी जाती हैं। ओझा (पुरोहित) इस उत्सव के समय दैवधुनि को विशेष प्रकार से प्रयोग में लाते है कि क्योकि ऐसी धारणा है कि दैवधुनि के माध्यम से वह (पुरोहित) देव-देवियों के साथ सम्वाद को स्थापित करता है। ताकि उन्हें धरती पर आवाहन कर समस्त मानव जाति में शांति और प्रसन्नता के वातावरण को प्रवाहित किया जा सके। यह उत्सव एक प्रकार से प्रकृति के साथ विशेष रुप से जुरा हुआ है। इस उत्सव के माध्यम से जिन.जिन देवताओं की पूजा की उनमें से प्रायः प्रकृति की शक्ति के रुप ग्रहण किया जा सकता है।

मूल शब्दः खेराई, बाथौ, दैवधुनि, वाद्य यन्त्र, औजार आदि।

प्रस्तावना
ब्रह्मपुत्र नदी की घाटी में बसने वाले बोड़ो असम प्रान्त का एक प्रमुख जनजाति समुदाय है। यह जाति असम के विविध जिलों और स्थानों में पाया जाता है। पूर्वोत्तर भारत के राज्यों के साथ-साथ नेपाल जैसे विदेशो में इस जाति के अस्तित्व को देखा जा सकता है। अपनी धर्म, संस्कृति और भाषा के कारण भारत में यह अपनी भूमिका को निर्वाह करता है। प्रस्तुत आलेख में बोड़ो समाज एवं संस्कृति से सम्बन्धित धर्म एवं विश्वास पर आधारित खेराई पूजा या उत्सव के आयोजन के विविध दृष्टिकोण को देखने का प्रयास किया गया है। किसी एक प्राचीन जाति को समझने के लिए उसके धर्म एवं आस्था से जुड़े विविध पहलुओं को जानने की आवश्यकता होती है। बोड़ो समाज एवं संस्कृति को समझने के लिए खेराई एक महत्वपूर्ण पहलु है जिसके आधार पर इस जाति के विकास क्रम को अध्ययन कर सकते हैं। खेराई उत्सव बोड़ो समाज के मध्य प्रचलीत काफी प्राचीन परम्परा का प्रतीक है। यह परम्पारा बोड़ो जाति का एक लोक उत्सव है जिसमें इस जाति के लोक मानस की समाजिक मानसिकता जुड़ी हुई है।

उद्देश्य
प्रस्तुत आलेख में बोड़ो लोक जीवन में अभिव्यक्त धर्म एवं दर्शन, प्रकृति चित्रण को वर्णन करने का प्रयास किया गया है। प्रकृति मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है। प्रत्येक समाज के प्रकृति का अपना विशिष्ट स्थान है। बोड़ो सामज के विविध पर्व जैसे- बैंसागु, खेराई उत्सव, आदि में प्रकृति की ही उपासना किया करते है। प्राचीन काल से ही बोड़ो सामज में अपने कुल देवता 'बाथौ' की अराधना के लिए प्रकृति को ही उपयोग में लाते रहे हैं। बोड़ो लोक जीवन में अध्यात्मिकता का भी अपना एक विशिष्ट स्थान है। बोड़ो समाज देवता को प्रकृति में निवास मानते है इसीलिए प्राचीन काल से अब तक अपने कुल देवता को प्रकृति में ही आरोपित करते है। सभी मानव समाज की अपनी एक विशेषता होती है जिसके लिए वह पहचाने जाते हैं। बाथौ धर्म के अन्तर्गत कई विधि विधानों का आयोजन किया जाता है।

शोध सामाग्री
प्रस्तुत आलेख की शोध सामाग्री विविध प्रकार के लेखों और साहित्य के सर्वेक्षण के आधार पर प्राप्त किया गया गया है। लोक साहित्य से सम्बन्धित ग्रन्थों में से आलेख को पुरा करने के लिए काफी मदद मिली हैं।

शोध विधि
प्रस्तुत लेख की विषय वस्तु के अध्ययन के लिए विशलेषणात्मक पद्धति को अपनाया गया है तथा यह विषय समीक्षात्मकता पद्धति की भी मांग रखता है।

परिकल्पना
1. बाथौ धर्म के अन्तर्गत खेराइ उत्सव के निर्धारण में आर्य सस्कृति का प्रभाव।
2. बाथौ धर्म आर्य संस्कृति का ही एक रुप।

बोड़ो जनजातियो का धर्म
बाथौ धर्म के अन्तर्गत खेराई पूजा बोड़ो जनजातियों का सबसे प्रधान धार्मिक उत्सव है। यह आशा, इच्छा का प्रतीक है। यह प्राचीन काल से चली आ रहो एक परम्पारा का प्रतीक है।

"The Kherai is the greatest religious festival of Bodos. It is celebrated for the well being of the people and the hervest." [1]

खेराइ से सम्बन्धित महत्वपूर्ण बात यह है कि
1. The part of percel of holy festivals of Bathou religion of

the Bodos, the eighteen Gods are worshipped in this festivals, Bathou Maharaja being the central figure. The festival is guided by a Douri, the main perist in accociation with Doudinia and Panthal Douri, Kham, Siphung, Zotha are used as a rhythm to the dances of Doudini and other participants [2].

2. In Bathouism is a form of forefather worship called Obonglaoree. The sijwu plant (belonging to the Euphorbia genus), is taken as the symbol of Bathou and worshipped. In the Bodo Language Ba means five and thou means deep. Five is a significant number in the Bathou religion. Five Philosophies: Earth, Water, Air, Sun and Universe. These five elements are Bathou and the master of five elements is called Bwrai Bathou or God [3].

खेराई पूजा या उत्सव का उद्देश्य

इस पूजा का प्रधान उद्देश्य है सवज्जनिक और नीजि जीवन का कल्याण और रक्षा करना। जीवन की सुरक्षा के लिए, सभी लोग इसे नीजि रुप से भी मनाते आ रहै है। वहीं दूसरी ओर सभी ग्रामवासियों के कल्याण के लिए सभी लोग एक साथ मिलकर मनाते है। जीवन की सुरक्षा और कल्याण के अलावा फसल की कटाई के लिए भी किया जाता है। बोड़ो जनजाति मुख्य रुप से कृषि पर ही निभज्र रहत है। कृषि ही इनके जीवन-यापन का प्रमुख साधन है। कृषि कायज् करने से पूवज् और बाद में खेराई पूजा का आयोजन किया जाता है तथा इस पूजा विधि के दौरान विविध प्रकार के देव-देवियों की पूजा-अचज्न भी की जाती है। खेराइ उत्सव या पूजा काफी खचीलज तथा इसके विधि-विधान काफी विस्तृत है। दयनीय आथिज्क अवस्था के कारण बोड़ो समुदाय के लोग इस उत्सव का आयोजन नियमित रुप से नहीं कर सकते है।

खेराई पूजा की उत्पत्ति या प्रारम्भ

यह ठीक से नही जा सकता है कि असम में खेराई शब्द की उत्पत्ति कहाँ से हुई है। भिन्न-भिन्न विद्वानों ने और लेखकों ने खेराई के विषय में कहाँ है । लेकिन डॉ. सुनिती कुमार चटर्जी के अनुसार- बोडों समाज की खेराई पूजा और त्रिपुरियों की खेर पूजा (kher) में काफी समान्ताये है । बाथौ बराई बोड़ो जनजातियों के प्रमुख अराध्य देवताओं में से एक है । जिसे खेराई बराइ और खुराई बोराइ के नाम से भी जाना जाता है । जिसका अर्थ है – a latent old man. बोड़ो समाज यह विश्वास रखता है कि खेराइ बराइ सभी प्रकार समस्त गुण से विद्यमान होता है । इसीलिए इन्हीं के नाम पर यह उत्सव मनाया जाता है । यह शब्द खेराइ बोराई शब्द खेराइ के साथ जुड़ा हुआ है । अलग-अलग रुपों में खेराई पूजा के लिए पशु और पक्षियों की बलि आवश्यक है । खेराई शब्द की जो खे ध्वनि है वह उस समय उत्पन्न होता है जब किसी बकड़ा और सुअर को बाथौ के सम्मुख बलि चढ़ाया जाता है। कुछ बाथौ धर्मावलम्बी यह विश्वास मत प्रकट करते है कि यह खेराइ शब्द खे ध्वनि के साथ राई उपसर्ग जोड़कर तैयार किया गया है जिसका अर्थ है पूजा। और बाथौ बराइ के सम्मुख उच्चारित की गई कुछ मंत्र। जैसे यह कहाँ गया है कि बोड़ो के खेराई पूजा और त्रिपुरियों की खेर पूजा में समान्तायें है ठीक इसी प्रकार असम के उत्तर कछार जिले के दिमासाओं के खेरनांग और नेपाल के मेच के खेराइमा में काफी समान्तायें देखने को मिलता है । यह ठीक से कहना मुश्किल है कि आखिर इस शब्द का उत्पत्ति कहाँ से हुई है। त्रिपुर वासियो को मध्य भी इस प्रकार के पूजा विधान के उत्सव रुप में मनाये जाने का नियम देखने को मिलता है ।

‘Kharchi puja lasts for seven days, the festivals is held at Old Agartala, at the temple premises of fourteen gods. On day of puja, the fourteen deities are carried by members of chantai, taken to river Saidra, it is bathed in the holy water and brought back to temple. They are placed in the temple again, decorated by various flowers, put up vermillion in the fore head of deities.’ [4]

‘Every day lots of people throng in the festivals both Tripuri and non-Tripuri participate in the festivals. People offer different type so Prasad like goat, buffalo, fouls, sweets etc. now a day many cultural progammes are performed in the night. A large fair is also organized on the occasion. People seek their welfare as well as the welfare of the society and the state in general.’ [5]

खेराइ पूजा के प्रकार

खेराई पूजा चार निम्नलिखित प्रकार के हैं जैसे –

1. दरशन खेराइ (Durshan kherai)
2. उमरा खेराइ (Umrao kherai)
3. फालो खेराइ (Phalo kherai)
4. नोंनि खेराइ (Noaoni kherai)

1. दर्शन खेराइ (Durshan kherai)

दर्शन खेराई असमीया कार्तिक महीने प्रथम सप्ताह में मनाया जाता है । यह खेराइ पूजा का सम्बन्ध माइनाव से है जिसे धन की दैवी के रुप में जाना जाता है । इस प्रकार इसे लक्खी खेराइ ;लक्ष्मी खेराईद्ध भी कहाँ जाता है । लक्ष्मी जिसे भारतीय धर्म एवं शास्त्र में धन की दैवी के रुप में पूजा जाता है । इसे बोड़ो में साली खेराई के नाम से भी जाना जाता है । यह शब्द विशेषकर जाड़े के समय के फल से सम्बन्धित है इस पूजा को ग्राम वासियों के कल्याण और रक्षा के लिए किया जाता है ।

2. उमरा खेराइ (Umrao kherai)

यह उत्सव भारतीय पंचाग के अनुसार आषाढ़ के समय में मनाया जाता है यह विशेष कर असम में आषाढ़ मास के समय जब कामाख्या देवी के दरबार में अम्बुवासी मैला लगता है इस समय को असम में आम्ठी सुवा अर्थात् the unclean period के नाम से जाना जाता है । इस समय में पुरे सात दिनों तक खेत में काम करना निषेध माना जाता है । यानि धरती को किसी भी प्रकार से छति नहीं पुहुचाया जाता है । यह खेराई ग्रीष्म कालीन फसलों की रक्षा के लिए किया जाता है ।

3. फालो खेराइ (Phalo kherai)

यह फालों खेराई असमीया माह के माघ पूर्णिमा में मनाया जाता है । इस खेराई को दनसरांग खेराई भी कहाँ जाता है। इसे विशेषकर पूर्णिमा की रात में मनाने का विधान बनाया गया है । दनसरांग का अर्थ है पूर्णिमा की उज्जवल रात्रि ।

4. नोंनि खेराइ (Noaoni kherai)

नो का अर्थ है घर औऱ परिवार । यदि एक खेराई पूजा का आयोजन घर पर ही किया जाता है तो इसे नोंनि खेराई कहाँ जाता है परिवार की कल्याण और किसी दुष्ट आत्मा की महसुस किया जाता है तब इसे मनाया जाता है । बोड़ो समाज में खेराई और गारजा पूजा का अपना एक पारम्परिक विश्वास रहा है जब कभी भी एक परिवार किसी भी प्रकार की समस्या का अनुभव करता है तब इस पूजा का आयोजन किया जाता है ।

खेराई पूजा के दौरान विविध दैव-दैवियों की उपासना और विधान

बोड़ो समाज में खेराई पूजा के लिए विविध प्रकार के दैव दैवियों की उपासना की जाती है । बोड़ो धार्मिक नियमों के अनुसार इन्हें भिन्न-भिन्न स्थान दिया गया हैं तथा उनके स्थान के आधार पर विविध प्रकार की बलि भी चढ़ाई जाती है ।

1. बाथौ बराइ

बा का अर्थ है पाँच और थौ का अर्थ है सिद्धान्त। यानि बाथौ के पाँच सिद्धान्त माना गया हैँ जैसे– धरती, आकाश, जल, वायु और अग्नि । बाथौ को प्राचीन काल से लेकर अब तक अपना कुल देवता स्वीकार करते आ रहे है । उसकी (बाथौ) की तुलना एक सिंजु वृक्ष से की गई है । इस वृक्ष की एक विशेषता है कि वह कभी मरता। उसकी डाली को काट कर रोप देने पर उसका पौधा उग आता है । बोड़ो समाज में उस वृक्ष को अमर माना गया है । इसलिए प्राचीन बोड़ो समाज में ईश्वर के अजर और अमर तत्वों को ध्यान में रखते हुये सिंजु वृक्ष को ही देवता के प्रतीक स्वरुप में ग्रहण करता है। बोड़ो समात में जितने भी देवता का अपने समाज में स्थान दिया गया है वे कहीं-न-कहीं प्रकृति से ही सम्बन्ध रखते है। एक तरह से देखा जाए तो यह समाज प्रकृति की उपासना करता है ।

बाथौ बराइ बोड़ो समुदायों ने देवताओं में प्रथम स्थान का दर्जा दिया है । इसे ही देवताओं में प्रधान स्थान दिया गया है। और देवताओं में प्रधान स्वीकार किया गया है । इनका स्थान बोड़ो समुदाय के सभी धार्मिक अनुष्ठानो में श्रेठ है । मूल वेदी में एक सिजु वृक्ष (जिसका अंग्रेजी नाम Euphorbia splendends है) के नीचे एक केले के पत्ता बिछा कर उसके उपर एक जोड़ी ताम्बुल-पान का पत्ता, केला, अगरब्ती के साथ दीप भी प्रज्वलित किया जाता है । उसमें बाथौ महाराज को आसन दिया जाता है। मूल वेदी के बाये तरफ एक लीक का निर्मीण कर उसमें छोटे-छोटे केले के पत्ते को बिछा कर ताम्बुल-पान का पत्ता, अगरबत्ती आदि को जला कर अन्य दैव-दैवियों को स्थापित या आसन दिया जाता है।

बाथौ महाराज की पूजा के लिए एक सुउर की बलि दिया जाता है । बलि के रक्त को बाथौ देवत की ओर से दौधनि (नृत्यकी) पी जाती है । बलि दी गई सुअर के मस्तक को और कुछ मात्रा के रक्त को बाथौ महाराज को चढाया जाता है। बलि के पैरो को और शरीर के कुछ अंश मांस काटकर उससे व्यंजन तैयार करके बौथौ महाराज को चढ़ाया जाता है ।

दैव-दैवियो को चढ़ाने के लिए पकाये गये किसी भी प्रकार के व्यंजनों में तेल, हलदी, मसाला, मिरची आदि को प्रयोग नहीं लाये जाने का विधान है। प्रमोद चन्द्र भट्टाचार्य कहते है कि-

"The Boros of the northern bank of Brahmaputra valley narrate their origin of creation in relation to the worship of Bathow. Bathow represents the five basic elements of creation. He is also as Sibray (Siva). Bathow or Sibray with his wife Sibury created this universe and the first man. Monsinsin. As Monsinsin remained a life-long celebrate, Sibray and his wife created Darimoba, the male and the spring Dowba, the female in order to propagate the human population (mansoy). Bathow created the SIZU plant (Euphorbia splendends), the first tree which stands as an emblem of the Supreme God at the alter" [6].

2. आयलेङ्

इस दैवता को बाथौ महाराज का अंग रक्षक माना जाता है तथा उसकी पूजा के लिए एक मुर्गे की बलि दिये जाने का विधान रखा गया है। इस देवता को प्रसन्न करने के लिए दैवधुनि द्वारा किये गये नृत्य को

3. आग्रां

इस देवाता को बाथौ महाराज का सेनापति स्वीकारा गया है । इस देवता को प्रसन्न करने के लिए एक बकड़ा की बलि दी जाती है तथा बलि के रक्त और कटे सर को देवता को भेट स्वरुप चढ़ा दिया जाता है।

4. खौइला

इसे बाथौ महाराज का संदेश वाहक या दूत माना जाता है । इसकी पूजा के लिए मुर्गे की बलि दी जाती है तथा उसके मस्तक और रक्त को देवता चढ़ा दिया जाता है। इस देवता का प्रसन्न करने के लिए किये गये नृत्य को मौछा खाउरि अर्थात् बीच में किया गया नृत्य कहाँ जाता है ।

5. कार्जि

यह बाथौ महाराज का अनुगामिनी या मंत्री स्वीकार किया गया है । इस देवता के लिए एक बकड़े की बलि दी जाती है ।

6. आव्ला खुंगुर

इसे बाथौ महाराज का एक ओर माया का नाम कहाँ जाता है । इसे महाप्राक्रमी देवाता माना जाता है । इसकी पूजा के लिए एक विशेष प्रकार की चावल की मदिरा (Rice Beer) के साथ एक सुअर की बलि दी जाती है तथा उसके अंश में रक्त और मस्तक को देवता के लिए समर्पित की जाती है। इस देवता को प्रसन्नता या आवाहान के लिए दैवधुनि द्वारा प्रस्तुत किये गये नृत्य को छा गौलाउ बौनाय अर्थात् सागर मंथन कहाँ जाता है ।

7. राजफुथुर

इसे बाथौ महाराज के पुत्र माना जाता है ।

8. राज-खान्द्रा

बाथौ महाराज का ही अनुगामिनी माना जाता है तथा इसके लिए एक सुअर को बलि देने का विधान रखा गया हैं। इस देवता को प्रसन्न किये गये नृत्य को खामाउ बार योनाय अर्थात् मादाल (एक ढोल आकार का वाद्य यन्त्र) के उपर कूद कर किया गया नृत्य ।

9. छांराजा, 10. छांरानी

इस देवता को सभी जंगली जीव-जन्तुओं का स्वामी माना जाता हैं और इस देवाता की पत्नी को छांरानी कहाँ जाता है । इन दोनों देवताओं को महापराक्रमी और महामाया माना जाता है । इसे बाथौ महाराज का शिष्य का दर्जा भी दिया जाता है । जब कोई शिकारी शिकार के लिए जंगल में प्रवेश करने से पहले उनकी पूजा-अर्चाना किया करते हैं तथा इसके लिए लाल मुर्गे की बलि देने का विधान है। प्राचीन बोड़ो समाज की मान्यता है कि इनकी पूजा या अराधना करने पर शिकार की प्राप्ति तत्काल होती है । हिन्सक जनतुओं को वे अपने वश में करके रखते है इसीलिए नेपाली समुदाय और बोड़ो समुदाय के लोग अरण्य के हिंस्र जन्तुओं से अपने घरेलु पशुओं की रक्षा के लिए उस देव-देवी केलिए लाल मुर्गे को बलि के रुप में उत्सर्ग किया जाता है। जनजातियों के मान्यतानुसार यह देवता फाल्गुन, चैत्र और वैसाख मास के दौरान वर्षा के जल से हिमालय से निकलने वालीसे नदियों के माध्यम से समततल मैदानो में बह कर आ जाते है और वह इधर-उधर विचरण करने लग जाते है। उसी दौरान लोगो के और पशु-पक्षियों में विविध प्रकार के रोगो के लक्षण दिखने लग जाते है। उस समय इस देव और देवी को खखा बोराय – खोखा बुरी या छंछालिया मौदाय कहाँ जाता है ।

"In a typical Kachari village as a rule neither idol of worship is to be found, but to the Kachari mind and imagination earth, air, and sky are alike peopled with a vast number of invisible spiritual being known usually as MODAI." [7]

हामबाइ होनाय (एक पूजा जिसे नये साल के प्रारम्भ में मंगल के लिए की जाती है, a worship performed in the beginning of a year for welfare) नामक पूजा इन देवताओं के लिए कर विदाई दी जाती है । खेराइ उत्सव में इस देवता को प्रसन्न करने के लिए दैवधुनि के नृत्य को खेलार नाम से जाना जाता है।

11. मोनाछी

मोनाछी मानह नामक नदी का नाम है । बोड़ो सम्प्रदाय में किंवदन्ती है कि अति प्राचीन काल में इस पृथ्वी का शासन एक राक्षस के हाथ में था । पृथ्वी के लोगो को उस राक्षस को कर देना पड़ता था । उस समय जितनी भी नदियाँ थी उसमे से सिर्फ मानह और दिहिं नदी ही राक्षस को कर देने में समर्थ थे। कर नहीं दे पाने के फलस्वरुप वह राक्षस शासक अन्य नदियों के जल को सोख लेता था जिस कारण नदियों का सुख जाता था और नदी के स्रोत के नीच कुछ मात्र में जल शेष रह जाता था । इस प्रकार के नदियों का स्परुप आज भी देखने को मिलता है । राक्षस को कर न पाने के कारण उनको भी मानह को खेराइ उत्सव में आसन देकर उसकी पूजा-अर्चना कर सम्मान दिया जाता है । मानह की पूजा के लिए एक जोड़ी ताम्बुल-पान को चढ़ाया जाता है । दैवधुनि इसके लिए खेराइ में मानदौला बौन्नाय नृत्य को प्रस्तुत करती है ।

स्पष्टीकरण है कि असम के जाति-जनजातियों समुदाय में जब कभी वन भोज के लिए किसी बड़े नदी के स्थान को चुना जाता है, तो उस स्थान पर कुछ भी काम प्रारम्भ करने से पूर्व उस नदी की धारा में एक जोड़ी ताम्बुल औऱ पान को प्रवाहित कर दिया जाता है। ताकि उसके द्वारा गये हुये लोगों में से किसी को भी हानि न पहुँचाया जाय ।

12. आलि खुंग्रि, 13. बिलाय खुंग्रि

यह दोनो को बाथौ महाराज का कन्या और देवी राजकुमारी माना गया है। उनकी पूजा या आवाहन के लिए सुअर की बलि देन का विधान रखा गया है ।

14. भान्डारी

इसे बोड़ो समाज में जलदेवी और मछली की देवी के रुप में स्वीकार किया गया है । तथा इसे खाद्य-भण्डार की मालकिन भी कहाँ जाता है। ऐसी मान्यता है कि इस देवी के पास मछली का भण्डार है। इस देवी पूजा के द्वारा प्रसन्न करने के पश्चात् ही जल में मछली मिलने की सम्भावना होती है। इस देवी के लिए एक मुर्गे की बलि दी जाती है ।

15. कुमारी

इसे असमीया में जखनी देवी के नाम से जाना जाता है। बोड़ो समुदाय में यह मान्यता है कि यह दैवी विविध स्थानों में विचरण करती फिरती है। उसके विचरण करते समय यदि उसकी दृष्टि में किसी मनुष्य को देख लेती है तो वह व्यक्ति को उलटी, शौच आदि रोग से आक्रांत होता है। कुमारी को प्रसन्न करने के लिए खेराइ पूजा में एक छोटे मुर्गे की बलि दी जाती है

16. बाछामुखि चौद्रि

इस देवता को बाथौ महाराज का बहनोई माना जाता है । घोड़ा चेंकुरोवा नृत्य के द्वारा उनकी महात्मा को प्रकाशित किया जाता है ।

17. रणचण्डी और 18. रण पागली

यह युद्ध या रण की देवी के रुप में जानी जाती है। किसी भी रण क्षेत्र में युद्ध करने से पूर्व एक मुर्गे की बलि देकर उसका स्णरण किया जाता है ।

19. बौलि-बुरि

इसे औषधी और मंत्र आदि के गुण फल प्रदान करने वाली देवी कहीं जाती है । ऐसी धारणा है कि इस देवी पूजा किये बिना किसी भी मंत्र और औषधी के गुण को प्राप्त नहीं किया जा सकता । खेराइ पूजा के दौरान इस देवी को भी आसन दिया जाता है । जब किसी व्यक्ति को कठिन रोग हो जाता है और दवा-दारु कराने के बाद भी उसका इलाज नहीं हो पाता तब किसी औषधी और मंत्र के गुणों को प्राप्त करने के लिए एक जोड़ी काले कबुतर के साथ उसकी पूजा की जाती है । बैलि बुरि के लिए एक सुउर की बलि देकर प्रसन्न करने का विधान बना लिया गया है ।

20. लाउखार गछाई

उन्हें गौशाला के देवता के रुप में पूजा जाता है। इसे गरखिया गौसाई (ग्वाल गौसाई) के नाम से भी जाना जात है । इसे कृष्ण भगवान के रुप में भी जाना जाता है । इनकी पूजा या सम्मान में एक जोड़ी कबुतर को मुक्त गगन में छोड़ दिया जाता है। दैवधुनि नाउ बौवा नृत्य के द्वारा इस देवता के गुण और महात्मा को प्रदर्शित करती है ।

21. नबाव बादशाह

इसे मुस्लमान देवता के रुप में स्वीकार किया जाता है। खेराइ पूजा के देवताओं के आसन के कुछ दूर पश्चिम दिशा में इसे भी आसन दिया जाता है। इस देवता को एक मुर्गे का हलाल कर प्रसन्न करने का विधान है। हलाल करने समय पुजारी अपने पहने हुये गमछे की लेंटि (अर्थात् गमछा पहने समय उसके फैले हुये आगे के हिस्से को दोनों पांव के बीच से डालकर पीछे की ओर मोढ़कर कमर में डाल लिया जाता है उसे ही बोड़ो में में लेंटि कहाँ जाता है) को खोलकर पश्चिम की अपने मुख को कर बिस्मिल्ला कह कर मुर्गे की हलाल की जाती है। एक प्रर्थना या प्रणाम कर इस पूजा का सम्पन्न किया जाता है ।

खेराइ पूजा या उत्सव के लिए स्थान निर्धारण और विधि

प्राचीन काल में एक प्रकार से बोड़ो समाज में पूजा आदि धार्मिक कार्यके लिए निश्चित घर या मंदिर जैसे स्थान का विधान नहीं था । कालान्तर में क्षणे-क्षणे इसमे बदलाव आने लगा है । लेकिन पारम्परिक खेराइ उत्सव का आयोजन के दौरान विविध दैव-देवियों की पूजा-अर्चना के लिए एक उचित विस्तृत खाली स्थान का चयन किया जाता हैं । जिसमे में पूजा आयोजन की जा सके । साधको द्वारा एक वेदी का निर्माण किया जाता है। इस वेदी की लम्बाई काफी अधिक होती है तथा इसे तीन भागों में विभक्त किया जाता है । यह दक्षिण दिशा से प्रारम्भ होकर उत्तर दिशा में समाप्त होती है । साधारणतः एक घास वाले मैदान में खेराइ उत्सव के लिए वेदी को बनाया जाता है। वेदी के प्रथम भाग में छोटे से कपड़े के टुकड़े को मैदान के ऊपर के लटकाया जाता है। यह इस बात का सुचक होता है कि ईश्वर का अस्तित्व विद्यमान है। इस वेदी के मध्य माग में एक सिजु वृक्ष को गाढ़ दिया जाता है और उसमे ही बाथौ बाराइ के रुप में स्थापित किया जाता है। इस सिजु वृक्ष के चारो ओर से बास के छोट-छोट पट्टी के द्वारा घेर दिया जाता है जिसके पाचँ स्तर होते है । बाथौ धर्म के पाचँ सिद्धान्त है जिसको सिजु वृक्ष में आरोपित किया जाता है ।

सिजु वृक्ष के नाचे एक मिट्टे के बने दीपक को प्रज्वलित की जाती है । पाँच भागों मे विभक्त ताम्बुल और पान के पत्ता, हरा केला और अनन्य सामाग्री को उन पत्तो के ऊपर रखा जाता है। एक घरा में शुद्ध जल भरकर जिसमें तुलसी के पौधे के अग्रभाग की डाली को तोड़ कर रखा जाता है । ताकि पूजा विधि के दौरान घरे में रखे हुये पवित्र जल को वेदी के ऊपर चिड़काया जा सके ।

सृष्टि के चिन्ह या प्रतीक के रुप में एक अण्डे को भी रखा जाता है । सच्चाई के प्रतीक के स्वरुप में एक छोटा सा पत्थर को भी बाथौ के सम्मुख रखा जाता है। बाथौ पूजा के दौरान वेदी के मध्य भाग से उत्तर भाग की और खांखला (khangkhala, a kind of szcred plant) के कुछ श्रेणी बनाये जाते है जिसमे माइनाव (लक्ष्मी देवी) धन की देवी को स्थापित किया जाता है। जिसके प्रतीक स्वरुप कुछ धान के बीच या कुछ फसलों को रख दिया जाता है। उत्तरी भाग के वेदी को सुन्दर और समृद्ध धरती का प्रतीक माना जाता है। इस पूजा के दौरान दैवरी र दैवधुनि दोनो को इस परम्परा के अनुसार पवित्र माना जाता है। जो पुजारी या पुरोहित के आदेशानुसार पूजा के विधि-विधानों को पारम्परिक रुप से पालन करती जाती है ।

वेदी के चारो ओर अगरवत्ती, चन्दन का धुँआ आदि को जला कर स्थान को पवित्र कर रखा जाता है । यह उत्सव तीन दिन और तीन रातों तक मनाया जाता है। प्राचीन काल में इसे सात दिन और और सात रातों तक मनाने का विधान था ।

खेराइ पूजा में वेदी का महत्व

बाथौ धर्म के खेराइ पूजा में वेदी की सम्पूर्ण लम्बाई का अपना एक विशिष्ट महत्व है । इसका एक पारम्परिक विश्वास है कि यह वेदी एक पवित्र मार्ग का चिन्ह है, जो स्वर्ग की ओर से धरती तक तथा धरती से ले करके स्वर्ग तक को ध्वनित करता है दार्शनिक मत है कि यह एक मार्ग है । वह स्वर्ग के देवता और धरती के समस्त मनुष्य के बीच का एक पवित्र समबन्ध है । इसमें एक सूती के छोटे टुकड़े को बांस के साथ कुछ हरी पत्तियों को बांध दिया जाता है । हरी पत्तियाँ कभी समाप्त ने होने वाली सिद्धान्त को सूचित करता है या सृष्टि कर्ता के नियम और सिद्धान्त कभी न समाप्त होने वाला है । इसके वेदी के निर्माण में बासों को विशेष रुप में प्रयोग में लाया जाता है ।

खेराइ उत्सव के दौरान दैवधुनि की भूमिका

दैवधुनि एक प्रकार की नर्तकी है जो खेराइ उत्सव या पूजा के समय भगवान या विविध देव-देवियों को प्रसन्न करने केलिए नृत्य को प्रस्तुत करती है। खेराइ पूजा के तीन दिन और रातो तक दैवधुनि पवित्र बाथौ के लिए, खेराइ के विविध देव-देवियों को प्रसन्न करने के लिए निरन्तर नृत्य करती रहती है। दैवधुनि खेराइ उत्सव मे मूल नर्तकी के रुप में अपनी भूमिका का निर्वाह करती है। खेराइ उत्स्व के दौरान दैवधुनि ओझा (पूरोहित या पूजारी) की सहायता से इस उत्सव के महत्वपूर्ण विधि-विधानों को नियामानुसार पालन करती जाती है जो इस उत्सव का महत्वपूर्ण अंश है । इस उत्सव में कुछ वाद्य यंत्रों की भी आवश्यकता होती है जैसे- दो मादाल (इसका आकार ढोल जैसा ही होता है परन्तु आकार में उससे बड़ा होता है, (one kind of drum) दो बास की बासुरी जिसे सिफुंग कहाँ जाता है, दो जोथा (मंजिरा) भी आवश्यकता खेराइ उत्सव में होती है ।

दैवधुनि की भूमिका में पूजा के प्रारम्भ में उसे तीन प्राकर क् विशिष्ट क्रियाकलापों (कार्याकलापों) में लिप्त देखा जाता है । पहला ओझा के द्वारा दिये गये सुत्रों या मंत्रों को उच्चारण करती रहता है। दैवधुनि के इस स्तर को आलंगिखांगिनाइ (Alongikhangnai अर्थात् senseless) कहाँ जाता है। दूसरे स्तर में trance (अर्थात्) गिर पड़ती है और तीसरे स्तर में वह अपने को आध्यात्मिक स्वरुप में परिणत कर लेती है। इस स्तर में वह (दैवधुनि) विविध प्रकार के देव-दैवियो की प्राचीन कहाँनियों एवं कथाओं को अपनी ही आवाज में वर्णित करती रहती है। वह बाथौ वेदी के चारों ओर घुमती हुई उसके ऊपर तुलसी के पत्ते के द्वारा घड़े के पानी को छिड़कती हुई वाद्य यन्त्रों की ध्वनियों के साथ नृत्य प्रस्तुत करती रहती है। अन्य भक्त जन भी दैवधनि का साथ देती हुई उस वृत्ताकार में नाचना प्रारम्भ कर देते हैं। दैवधुनि नाचती हुई, विविध प्रकार के देव-दैवियों की प्रवृत्तियों को अनुसरण करती है। वह 18 प्रकार के विविध नृत्यों को खेराइ पूजा के दौरान प्रस्तुत करती है। उसी समय वह अपने प्रवृत्ति के तीन भागों (स्तरों) में विभक्त कर लेती है । सबसे पहले वह अपनी मनःस्थिति को बदलता है ।, दूसरे वह स्वयं को देव-दैवियों में स्थापित करती है, और तीसरे में वह देव-देवियों के प्रवृत्तियों का अनुसरण करती हुई दिखती है । इसी दौराम दैवधुनि अपने दाये हाथ में एक लम्बी तलवार और बाये हाथ में धाल को धारण करती है ।

प्राचीन काल में इस प्रकार के तलवार और धाल को बोड़ो जनजाति युद्ध के समय प्रयोग में लाया करते थे। नृत्य समाप्त हो जाने के बाद वह लोगों को भविष्य बताना प्रारम्भ करती है । गाँव में अच्छे और बुरे लड़कों का वर्णन करती है, कृषि की पैदावार, सफलता और असफलता का वर्णन करती है । निकट के भविष्य किसी भी प्रकार की सम्भाव्य खतरे के प्रति आगाह करती हुई ग्राम वासियों को अपनी नैतिक दायित्व के प्रति सचेत करती है ।

खेराइ पूजा या उत्सव के समय दैवधुनि द्वारा किये नृत्यों का वर्गीकरण

खेराई पूजा या उत्सव के दौरान देव-देवियों की प्रसन्नता के लिए दैवधुनि विविध प्रकार के नृत्यों को प्रदर्शन करती है । विविध देवताओं के लिए विविध नृत्यों का वर्णन निम्नलिखत है-

1. बाथौ गिदिंनाय (Batho Gidingnai) - दैवधुनि बाथौ वेदी के चारो और कुछ समय तक बाँसुरी (जिसे बोडो में सिफंग कहां जाता है) की सुर के साथ नृत्य करती रहती है जिसमें खाम (one kind of drum) और जोथा (मंजिरा) आदि वाद्यों यंत्रो का भी सहयोग होता है ।
2. छोत्राली (Chotrali) - इस नृत्य में दैवधुनि अपने दाये हाथ में तलवार और बाये हाथ में ढाल को धारण करती हुई बाथौ देवात (बोड़ो समुदाय का) वेदी के चारों और घुमती हुई अपने नृत्य को प्रस्तुत करती है । यह एक युद्ध नृत्य है जो बोड़ो समुदाय की रण की देवी रणचण्डी या रणफाहली को प्रसन्न करने के लिए की जाती है ।
3. खापरी छिपनाई (Khapri Chipnai) - इसमे दैवधुनि रण कौशल नृत्य को प्रस्तुत करती है यह मान्यता है कि रण क्षेत्र में एक योद्धा शत्रुओं के प्रहार से कैसे बच सकता है। यह नृत्य बुढ़ा आइलोंग देवता से सम्बन्धित है। जिसे बाथौ महाराज के अंगरक्षक क् रुप में जाना जाता है। इस नृत्य के दौरान, वह उपने हाथ में तवलार और ढाल को धारण किये रखती है ।
4. खोजामा फोनाई (Khojama Phonai) - इस नृत्य में दैवधुनि विविध प्रकार के रण कौशलों को प्रस्तुत करती हुई यह दिखाना चाहती है कि कैसे युद्ध में शत्रुओं को परास्त किया जा सके ।
5. गानडोउला बानना (Gandoula Banna)- यह नृत्य मनसा देवी या मानुसा से सम्बन्धित है । इस नृत्य में शत्रुओं को भेदने के लिए विविध प्रकार के कौशलों को प्रस्तुत करती है ।
6. छांगलाउ बानी (Changalow bani)- इस नृत्य के द्वारा दैवधुनि यद्ध के तैयारी को प्रस्तृत करती है । यह नृत्य बोड़ो देवात आब्ला खुंगुर से सम्बन्धित है जिसे एक शक्तिशाली देवता के रुप में जाना जाता है ।
7. माफुर गिलीनाई (Maphur Gelenai)- बोड़ो में मफुर का अर्थ हिरण से है । दैवधुनि यह नृत्य एक हिरण की प्रकृति में करती है । यह विश्वास है प्रकट किया जाता है कि ईश्वर में भी हिरण की सी प्रकृति होती है । हिरण एक ऐसा पशु है जो बड़ा ही प्यारा, कोमल, मुलायम और फुर्तिला होती है ।
8. नो बोनाय (Nao Bonai)- इस नाव बोनाय नृत्य का महत्व बडप्पन, करुणा आदि के प्रति दृष्टि रखते हुये प्रस्तुत की जाती है । यह नृत्य लौखार गौसाई से सम्बन्धित है, जिसे बोड़ो समाज में गौसाला के देवता श्राकृष्ण के रुप में पूजा जाता है।
9. खामाउ बारखोनाई (Khamao Barkhonai)- यह नृत्य राजाकन्द्ररा देवता से सम्बन्धित है राजाकन्द्रा बुढ़ा बाथौ या बाथौ महाराज के अनुगामिनी और बेड़े पोते के रुप में माना जाता है । इस देवता की उपासना करते समय की गई किये गये नृत्य को ही Khamao Barkhonai कहाँ जाता है । इस नृत्य की एक विशेषता है कि इस दौरान दैवधुनि ढोल पर चढ़कर नृत्य को प्रस्तुत करती है ।
10. दाउथि दोंनाई (Daothoi Dongani)- ईश्वर के नाम पर दिये गये बलि के रुप दिये मुर्गे के रक्त को दैवधुनि एक कटौरी में रख लेती है तथा बासुरी की धुन के साथ नाचती रहती है। और बाद में वेदी के सामने खड़ी हो करके कटोरी में रखे हुये रक्त को पी जाती है ।
11. मासकाखौरी मानहनाई (Maskakhaori Manhanai)- दैवधुनि का यह नृत्य कहीला देवता से सम्बन्धित है । जिसे बाथौ महाराज का मुख्य संदेश

वाहक माना जाता है ।

12. माउजी मेंबरागं गिलीनाई (Maoji Mengbrang Gelenai)– यह नृत्य दैवधुमि उस समय प्रस्तुत करती है जब किसी परिवार के द्वारा खेराई पूजा का आयोजन अपने किसी परिजन की रोग मुक्ति या कुशलता के लिए किया जाता है ।

उपर्युक्त नृत्यों के अलावा भी दैवधुनि खेराई उत्सव के दौरान विविध प्रकार नृत्यों को प्रस्तुत करती है । जैसे- जारा फागला, थेनथामालि, छारा निछला आदि । इन सब को बोड़ो समुदाय में पूर्वपुरुषों के प्रेत आत्मा के रुप में जाना जाता है ।

खेराइ उत्सव में प्रयुक्त की जाने वाली आवश्यक सामाग्रीः

खेराइ उत्सव के आयोजन के लिए ग्रामवासियो द्वारा कुछ आवश्यक सामाग्रियों को संग्रह किया जाता है। संग्रह की सामाग्री इतनी आवश्यक है कि जिसके अभाव में उक्त उत्सव या पूजा की विधि को पूर्ण करना असम्भव है। संग्रह की जाने वाली सामाग्रियों का विविरण इस प्रकार है-

1. एक सिजु वृक्ष की डाली ।
2. एक तुलसी का पौधा।
3. तीन बिजुली बाँस । यह बास की एक प्रजाति है यह बाँस अन्य बासों की अपेक्षाकृत आकार में छोटा और पतला होता है । जिसे असमीया भाषा में बिजुला बास कहा जाता है ।
4. पीसा हुआ चावल ।
5. अट्ठारह जोड़ी कुश ।
6. उन्नीस जोड़ी कुमदनी की पूरा पौधा ।
7. चार जाति बास। बाँस के वृक्ष की एक प्रजाति। जो असम के प्रायः ग्रामवासियों के घर में उपल्बध होता है ।
8. दुब्बा घास के नौ टिनके ।
9. एक स्वर्ण अंगुठी ।
10. छः केला का पत्ता ।
11. केला (दो थक अर्थात् पेड़ पर लगे पूरा केला)
12. अस्सी ताम्बुलों की ।
13. पान का पत्ता ।
14. सिन्दुर ।
15. अगरबत्ती ।
16. धुआ लगाने की सामाग्री (धूना) ।
17. धागा (दीपक की तिल्ली बनाने के लिए) ।
18. सरसों का तेल ।
19. मिट्टी के बने दीपक ।
20. अक्षत (चावल) ।
21. चावल की बनी मदिरा, दो घड़े मे भरकर । जिसे बोड़ो में जौ और अग्रेंजी में Rice Beer कहाँ जाता है ।
22. पीटल की बनी हुई दो लोटा । जिसे असमीया में घटी कहाँ जाता है असमीया संस्कृति में इसका काफी महत्वपूर्ण स्थान है ।
23. पीतल का एक छोटा कटोरा ।
24. गन्ने की एक लम्बी डाली ।
25. गामारी वृक्ष (यह एक वृक्ष की प्रजाति है जसकी लकड़ियो से फर्नीचर बनाई जाती है) की बनी खाम्फलाई (इसे असमीया में पीरा कहाँ जाता है, जो बैठने के लिए प्रयुक्त किया जाता है ।

खैराइ पूजा या उत्सव में प्रयुक्त की जाने वाली वाद्य यंत्र और औजार वाद्य यन्त्र

1. ढोल की एक जोड़ी । जिसे बोड़ो में खाम कहाँ जाता है ।
2. एक जोड़ी मंजिरा । जिसे बोड़ो में जोथा कहाँ जाता है ।
3. बास की बनी हुई बासुरी । जिसे बोड़ो भाषा में सिफुंग कहाँ जाता है । इस बासुरी की यहीं विशेषता है कि केवल में पाचँ ही छेद होते हैं ।

औजार

1. तलवार एक या एक जोड़ी । जिसे बोड़ो भाषा में थुंगरी कहाँ जाता है ।
2. ढाल (एक या एक जोड़ी) ।

खेराइ पूजा के दौरान ओझा, पुरोहित या पूजारी की भूमिका

खेराइ पूजा के दौरान ओझा या पुरोहित की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है । ओझा भा दैवधुनि की भाँति अपनी भूमिका का निर्वाह करता है । वह खेराइ उत्सव के भक्तों और अपने सभी सहकर्मियों को दैवधुनि और गिथाल के नृत्यों को सुचारु रुप से चलाने के लिए तथा उसकी सहायता के लिए निर्देश देते रहते है । सभी ग्रामवासी किसी खेराइ पूजा या उत्सव का आयोजन करते है तब सभी लोग उनके निर्देशों को नम्रता रुप से पालन करते है। खेराई उत्सव के समय ओझा सभी प्रकार के मत्रों का उच्चारण करते है। यह विश्वास प्रकट किया जाता है कि ओझा को पूजा के दौरान ईश्वर या देव-देवियों की गलिविधियों का पता चलता रहता है। वह मंत्रों का जाप या उच्चारण इस प्रकार करता है कि सरलतापूर्वक सभी देव-देवी प्रसन्न हो जाये.। ओझा देव-देवियों को धरती पर स्वागत के लिए विविध मंत्रो का उच्चारण करते है ।

ऐ फिफा गुरु
आनान गसाइ बिनान गसाइ नों
अनदो अनदो नोंनि अगियान
बर' फिसाफोरखौ अनदो अनदो ।
ऐ सोरजिगिरि नोंनि
नोंनो फोथाङो, नोंनोलाय जाहोयो ।
नोंनिखुरै देरसिन लावासिन रावबो गैलिया,
ऐ बाथौआबो बान्दोबा सिजौआबौ गरंबा
बर' नि खुगाया फंबा ।
बिमा फिफा गुरु, बिनिखायनो बाथौ
फाथिनानै, सिजौ गाइनानै, गासा गाइनानै
खाम जथा सिफुं लानानै नों फिफाखौ अनसायो
अनदो आफा फिफागुरु अनदो,
अन्दर सिङाव गोग्लैसोनानै थानाय
बर' फिसाफोरखो अनदो अनदो ।
ऐ फिफागुरु खोमसिनिफ्राय बोखांनानै
स्रांआव लांदो जोंखौ ।
सोरगो सानिफ्राय बोर सारस्रिनानै
हरदो नोङो जों फिसाफोरनो । [8]] (मूल बोड़ो भाषा में)

हे ईश्वर हमारे पिता,
आप अपने अनभिज्ञ बोड़ो शिशुओं की रक्षा करे ।
आप स्रष्टा, रक्षक और पालक
सभी एक साथ है, आप बेजोड़
बाथौ की वेदी में पांच बास की गांठे
सीजू पौधे को पांच किनारे है
इसलिए बोड़ो के पांच सिद्धान्त हैं ।
हम बेदी पर सीजू पौधा लगाते है

और तेल दीपक जलाते है
और आपको पूजते हैं
खाम, जथा और सिफुं बजा कर ।
हे पिता दयावान बनें,
अपने बोड़ो पुत्र पर दया करें
जो अनभिज्ञ के अन्धकार में डुबे हुए ।
हे पिता हमें अन्धकार से निकाल दें,
हमें प्रकाश में उठा कर ला दे ।
स्वर्ग से हे पिता
हम पर आशीष की वर्षा करें ।[9] (हिन्दी में अनुदित रुप)

खेराई पूजा के दौरान ओझा दैवधुनि के द्वारा विविध देव-देवियों को प्रार्थना प्रस्तुत करता है । उपर्युक्त प्रार्थना का उच्चारण करते समय यह देखने को मिलता है कि ओझा बिना किसी भा साहारे के आधा ही बैठता है। इस आधे बैठने की स्थिति को जासलांग कहते है ।

खेराइ पूजा के अन्त में सभी भक्त लक्ष्मी देवी (माइनाव) के चिन्ह के रुप में दैवधुनि से अपने घर ले जाने के लिए लेते है । दैवधुनि धरती पर बाथौ महाराज की वेदी के सम्मुख बिना किसी क्रिया के बैठ जाती है । ओझा की सहायता से सभी भक्त दैवधुनि के इस प्रकार बैठने की स्थिति पुष्टि करवाना चाहते है । तब ओझा यह पुष्टि करता है कि दैवधुनि अभी लक्ष्मी देवी की मुद्रा में है। अतः इस देवी को प्रसन्न और सन्तुष्ट करने के लिए एक सन्दर सुअर की बलि दी जाती है। बलि चढ़ाई गई सुअर का मस्तक, शरीर, और रक्त आदि को लक्ष्मी देवी को चढ़ाया जाता है ।

उस समय बासुरी, ढोल, और मंजीरा के द्वारा मधुर धुनों को उत्पन्न किया जाता है । तथा ओझा भी मंत्रों का उच्चारण करते हुये देवी लक्ष्मी का आवाहान करती है। दैवधुनि जो अब तक लक्ष्मी देवी की मुद्रा में आसन लगाई हुई बैठी थी सभी भक्तो को लक्ष्मीदेवी के रुप में सम्बोधित करती हुई कहती है कि-

हे बर' फिसाफोर, नोंसोर आंखौ माबेव लांनो
नोंसोर आंखो दानो लांगोन गाबोननो दैयैव फानसे
अराव फानसे खालामनानै जागोन
अनागारि खालामनानै जागोन
आं थांनाय नङा नोंसोर जे लांमाजों
फैदों बे लामाजों थांफिन ।[10] (मूल बोड़ो भाषा में)

हे बोड़ो पुत्रों कहाँ ले जाआगे मुझे
यदि तुम आज मुझे ले जाओगे,
तो कल डाल दोगे जल या अग्नि में ।
करोगे उपेक्षा मेरी,
अतः नहीं चाहती जाना साथ तुम्हारे,
लौट जाओ,
उस मार्ग से, जिससे तुम आए थे। [11](हिन्दी में अनुदित रुप)

फिर सभी भक्तो की ओर से ओझा देवी लक्ष्मी को पधारने के लिए प्रार्थना करते है-

नों फै नांगोन, माइनाव आइ
नङाब्ला जों बोरै थांनानै थानो
नोंनो जोंनि जिउ।
नोंनि अन्नायायवो जेबो जिराद थांनानै दङ आइ
नो नङाब्ला दान्दिसेबो थांनो हाया आइ
नों फैथार नांगै, नङाब्ला फाफ नांगोन
जोंनि खरनि थै मोनलोंगोन दहाय आइ
नो फैथारनांगोन [12] (मूल बोड़ो भाषा में)

ओ लक्ष्मी देवी माइनाव
तुम्हें आना ही होगा,
तुम बिन कैसे जिएगे हम।
तुम्हारी कृपा पर आश्रित हम,
हमारे घर आने पर बनोगी अपराधी,
पीनी पड़ेगी तुम्हे हमारे सिर की रक्ताधार,
ओ माँ तुम्हे आना ही होगा। [13] (हिन्दी में अनुदित रुप)

सभी भक्तों के प्रार्थन से देवी लक्ष्मी प्रसन्न होती है। और अंत में सभी भक्तों के घरो में
पधारने या वास करने में प्रस्तुत होती है। वह एक शर्त पर भक्तों के साथ जाने के लिए प्रस्तुत होती है। लक्ष्मी के रुप में दैवधुनि कहती है कि.....

थु फिसाफोर, आंखौ नोंसोर जोथोनै लाखि
आंनो सामफ्रामबो फाव फुजा हो
मानसिनि दोहोन दौलदआ दिनै एसे गाबोन एसे बारायलांगोन
आंखौ नोसोर मोजाङै सामफ्रामबो खुलुम। [14] (मूल बोड़ो भाषा में)

चलो ओ मेरे प्यारे पुत्रों
रखना मुझे पूर्ण सावधानी से,
रहुँगी तुम्हारे घर में
यदि करोगे पूजा मेरी प्रतिदिन।
वर्धमान होगी तुम्हारी सम्पत् प्रतिदिन।
इसलिए करो मेरी पूजा प्रतिदिन। [15] (हिन्दी में अनुदित रुप)

दैवधुनि लक्ष्मी देवी की इच्छानुकुलता का जानकर खड़ी हो जाती है और नृत्य करना प्रारम्भ कर देती है। सभी भक्त जन इस बात को जानकर प्रसन्न हो जाते है कि उन्होने सफलता पूर्वक देवी को मना लिया है। जो उनके साथ उनके घर जा कर रहने के लिए तैयार हो जाती है। वे सारे दैवधुनि के साथ नृत्य करना प्रारम्भ कर देते है। सभी भक्तों का नृत्य करना चलता रहता है लेकिन दैवधुनि कुछ क्षण बाद बाथौ बराया या हाराज के सम्मुख आ करके अपने दोनों हाथों से दो बाँस के खम्भों को पकड़ कर एकाएक मुर्क्षित या अवचेतन अवस्था को प्राप्त कर लेती है। तब ओझा और सभी भक्त जन एक साथ बाथौ महाराज की जय ध्वनि देना प्रारम्भ कर देते है। इसी समय ओझ पीतल के लौटे में रखे हुये पानी (जिसे बोड़ो भाषा में दोइ शान्ति कहाँ जाता है।) को दैवधुनि को चेतन अवस्था में लाने के लिए मस्तक पर छिड़क दिया जाता है, जल को छिड़कने के लिए तुलसी की पौधे के अग्रभाग को प्रयोग में लाया जाता है। इन क्रियाओं के परिणामस्वरुप दैवधुनि पुनः चेतल अवस्था को प्राप्त कर लेती है और इसी के साथ खेराइ पूजा या उत्सव का भी अंत हो जाता है।

उपसंहार

बोडो समाज के धार्मिक विश्वास खेराइ उत्सव के उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहाँ जा सकता है कि यह उत्सव बोड़ो समाज का एक अभिन्न अंग है। यह

उनका एक पारम्परिक उत्सव है जो प्राचीन काल से चली आ रही है। यह उत्सव एक तरह से प्रकृति की ही उपासना करना है। इसमे एक चीज यह देखने को मिलता है कि ईश्वर का कोई आकार या स्वरुप नहीं है बल्कि प्रकृति के विविध तत्वों में ही ईश्वर के स्वरुप को आरोपित किया जाता है। ईश्वर सर्वत्र विद्यमान है यानि इस उत्सव मे उसके निर्गुण निराकार ब्रह्म की उपासना की जाती है। जो कबीर दास के निर्गुण निराकार की धारणा के समकक्ष ठहरता है। बोड़ो समाज का यह एक प्राकृतिक स्वरुप है। आज के इस आधुनिक समय में भी इस प्रकार के उत्सवों का आयोजन करते आ रहे है। असम में ईश्वर का स्वरुप वह प्रकृति ही है। प्रकृति से कोई ओर बड़ा देवता इस सृष्टि में नहीं है ।

पादटीका

1. Boro, Dr. Anil, Folk Literature of Bodos, Page No. 13.
2. Bodo-English-Hindi Dictionary, Bodo Sahitya Sabha, complied by Late Promad Chandra Brahma, Published by- Onsumoi Library, Kokrajhar-70, Assam Page No-133.
3. https://en.wikipedia.org/wiki/Bodo_people**,** March 2016.
4. http://www.tripura.org.in/kharchi.htm, March 2016.
5. http://www.tripura.org.in/kharchi.htm, March, 2016.
6. An Introduction to Bodo-Kachari's Society and Culture, by Pramod Chandra Bhattacharya. - Voven Narzey, Bodo Kachari Swamaj or Sanskriti.
7. Endle, Rev. Sidney, RELIGION, The Kacharis, Ed- Jan. 2007, Published- Bina Library, College Hostel Road, Panbazar, Guwahati-01, Assam, Page No – 33.
8. उथ्रिसार बसुमतारी, संकलन कर्ता, डॉ0 रमेश भारद्वाज, सम्पादक एवं अनुवादक, बोड़ो लोक गीत, प्रकाशकः गाधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 206
9. वहीं, पृष्ठ संख्या- 207
10. वही, पृष्ठ संख्या- 231
11. वहीं, पृष्ठ संख्या- 231
12. वहीं, पृष्ठ संख्या- 232
13. वहीं, पृष्ठ संख्या- 232
14. वहीं, पृष्ठ संख्या- 233
15. वहीं, पृष्ठ संख्या- 233

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. बसुमतारी, उथ्रिसार, संकलन कर्ता, भारद्वाज, डॉ0 रमेश, सम्पादक एवं अनुवादक, बोड़ो लोक गीत, (संस्करण-) प्रकाशकः गाधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा, नई दिल्ली- ।
2. नार्जि, भवेन, लेखक, बोड़ो कछारीर समाज आरु संस्कृति, संस्करण- 2009, प्रकाशक- वीणा लाइब्रेरी, गुवाहाटी, असम।
3. सक्सेना, उषा, लेखक, लोक साहित्य एवं संस्कृति, (संस्करण-),प्रकाशक- राज्य भाषा प्रकाशन, दिल्ली-।
4. उपाध्याय, डॉ0 कृष्णदेव, लेखक, लोक साहित्य की भूमिका, (संस्करण-), प्रकाशक- साहित्य भवन प्रा. लि. इलाहाबाद-।
5. Brahma, Dr. K, Author, Aspects of Social Customs of the Bodos, Edition- 1989, Published by Shri Chiranjib Brahma, Gossaigion, Dist- Kokrajhar, Assam.
6. Brahma, Pramod Chandra, (Complited by), BODO-ENGLISH-HINDI DICTIONARY, (Fist Edition- 1996), Publisher- Onsumoi Libary and Bodo Sahitya Sabha, Kokrajahr- 70, Asam.
7. Boro, Dr. Anil, Writer, Folk Literature of Bodos, (First Edition – 2001), Publisher- N.L Publication, A.R.B Road, Panbazar, Guwahati – 01, Assam.